शिव और शक्ति

ओ३म, शिव और शक्ति ये दो शब्द स्वयं सिद्ध हैं। ये हर एक के अंदर पाये जाते है। संख्या वालों ने इसे प्रकृति और पुरुष कहा है। किसी ने यह माया और ईश्वर कहा। वास्तव में शिव और शक्ति कोई अलग पदार्थ नहीं, एक ही पदार्थ है। एक ही पदार्थ के दो नाम है। अर्थात् स्थूल शरीर से लेकर सूक्ष्म शरीर तक कारण शरीर तक शक्ति का सम्बन्ध माना जाता है। इसके पीछे जो है, शिव का स्थान माना जाता है। यह स्थूल शरीर सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर–इसके प्रति भी वैसा ही पाया जाता है।

शिव और शक्ति का मिश्रण होकर ही सृष्टि की रचना होती है। कोई भी पदार्थ तुम उठा कर देखो, उसके अन्दर शिव और शक्ति का मेल होगा। ये दोनों मिलकर ही सृष्टि बनते है। अकेले कोई सृष्टि नहीं बनाता क्योंकि दोनों का एक ही रूप है। अकेले कोई शब्द नहीं कर सकता। कोई भी काम करना है तो दोनों हाथों से करना पड़ेगा। यदि शब्द लिखना है तो शिव और शक्ति दोनों से लिखा जायेगा। ताली बजाना है तो दोनों हाथों से बजानी होगी। किसी भी पदार्थ को देखना है तो दोनों के संघर्ष से ही देखना होगा। दोनों की ज़रूरत है सृष्टि को।

अकेले से सृष्टि बन ही नहीं सकती। दो के बिना कभी सृष्टि पैदा नहीं हो सकती, इसलिए वह शिव ही शक्ति का रूप धारण करता है। शिव, शक्ति को धारण करता है, फिर शिव और शक्ति मिलकर सृष्टि का संचालन करते हैं। जैसे हमारा आत्मा और शरीर है। इस शरीर के अंदर आत्मा की शक्ल में शिव छुपा हुआ है। शरीर की शक्ल में शक्ति छुपा हुआ है। व्यवहार के अंदर शक्ति का क्रिया–क्षेत्र जो होता है, स्थूल से सूक्ष्म से कारण में संचार करता है। शरीर शक्ति का स्थान माना जाता है। उसके पीछे आत्मा के रूप में शिव का स्थान माना जाता है। जिस पदार्थ को भी देखो, वह शिव और शक्ति का ही सम्मिश्रण है।

शिव की आराधना के बिना शक्ति का होना संभव नहीं होता है और शक्ति के आधार के बिना शिव का होना संभव नहीं होता क्योंकि शिव के साथ शक्ति है। शिव की इसलिए जरूरत पड़ती है। बिना शक्ति के कभी भी शिव को प्राप्त नहीं किया जा सकता है। शक्ति के बिना हम बलहीन हैं। बलहीन कभी आत्मा को प्राप्त नहीं कर सकता। बल शक्ति को कहते हैं। शक्तिमान ही ईश्वर को प्राप्त कर सकता है "न अयं आत्मा"।

इसी प्रकार सष्टि में जिन-जिन पदार्थों में प्रतिष्ठा है, यह जो कुछ भी नज़र आता है, यह सब शक्ति की वजह से है। जो कमज़ोर होता है वह किसी काम का नहीं होता। संसार में, समझ लो, कमज़ोर की ज़िन्दगी बिल्कुल फ़िज़ूल होती है। अत: कहना होगा कि शक्ति की हमको बड़ी भारी आवश्यकता है। प्राचीन काल से शक्ति का पूजन बराबर होता रहा है। प्राचीन समय में भी नवरात्रों आदि में शक्ति पूजन होता था।

मार्कण्डेय पुराण और देवी भागवत आदि में शक्ति का विशेष महात्म्य बताया गया है। क्योंकि जहाँ शक्ति से काम किया जाता है वहाँ शक्ति का ही विशेष रूप से वर्णन किया जाता है। जहाँ शक्ति का लय स्थान माना गया है, वहां शिव का विशेष रूप से वर्णन किया जाता है। सृष्टि में शक्ति का जितना वर्ण्रन आता है, उससे सिद्ध होता है कि शक्ति की बड़ी भारी आवश्यकता है। विशेष रूप से और सूक्ष्म से कारण शरीर तक। जो अभिमान करने वाला मनुष्य है, उसके लिए शक्ति के पूजन की विशेष महत्ता मानी गई है।

योग-शास्त्र के अन्दर भी शक्ति की बड़ी भारी विशेषता मानी गई है। जिसे कुंडलिनी शक्ति वगैरह कहते है। यह शरीर का मूल स्थान है। कुंडलिनी के अभाव में शरीर कोई काम नहीं कर सकता। हमारे शरीर में विद्या, आदि जो भी नज़र आता है वह सब कुंडलिनी की शक्ति की वजह से मानी जाती है। यह कुंडलिनी को शक्ति माना जाता है। इसी की वजह से विद्या और बुद्धि आदि का अस्तित्व है। यह योगशास्त्र के ज़रिए से कुंडलिनी को जागृत करके शिव के साथ मिला देता है। तो शिव-शक्ति का जब मेल होता है, कल्याण होना माना जाता है। तो हमारे शरीर के अंदर कुंडलिनी का बड़ा भारी मुख्य स्थान है। इसे शक्ति भी कहा जाता है। शक्तिपात जो मुद्रा वगैरह कहता है, हठयोग में शक्तिपात की मुद्रा से शक्ति को जाग्रत करने की कोशिश करता है। जागृत होकर वह ऊपर उठ जाता है तो वह शिव के साथ मिल जाता है। जब जागृत हो जाता है तब कल्याण हो जाता है। यह शिव-शक्ति का विवाह कहा जाता है।

शिव और पार्वती का विवाह जो है, यह कुडलिनी को जागृत करके शिव के साथ मिलाना ही शिव और पार्वती का विवाह माना जाता है। इसमें कल्याण होता है। तो कहने का हमारा मतलब है, संसार में जितनी भी क्रियाएँ हैं ये सब शक्ति के द्वारा ही होती हैं। इसलिए शक्ति को प्रधान बना दिया गया है।

जिस व्यक्ति के अंदर, जिस मनुष्य के अंदर शक्ति का अभाव मान लिया जाए उसे "शव" माना जाता है। वह मनुष्य किसी भी काम का नहीं होता है। जैसे "शव" जो होता है उसमें किसी भी प्रकार शक्ति नहीं माना जा सकता और कहा जाता है कि उसमें कोई भी शक्ति नहीं है। अतः सृष्टि के अंदर यदि शक्ति न हो वह शव ही माना जाता है। कोई देश हो, राष्ट्र हो, मनुष्य हो, कोई भी हो। इस शक्ति के ही हम भिन्न भिन्न शक्ल में उपासक हैं। वास्तव में शक्ति में जीव के अंदर बिना शिव तत्व के कोई शक्ति नहीं होता है। शिव के अलावा कोई शक्ति नहीं होता है।

शिव के ही दो रूप हैं - शिव रूप या कल्याण रूप और शक्ति रूप। ये दो शक्लों में शिव ही काम कर रहा है। इसके अलावा कोई पदार्थ नहीं। इनका सम्मिश्रण हो जाए तो यह शिव रहता है जब अलहदा-अलहदा रहता है, तो सृष्टि का सृजन होता है। सृष्टि की रचना करके शिव अलहदा रह जाता है और शक्ति के ज़रिए से सृष्टि का संचालन करता है। यह सृष्टि के अंदर जितने भी काम करते हैं। शक्ति-सम्पन्न ही सृष्टि का काम कर सकता है। और जिसके अंदर शक्ति नहीं होता, सृष्टि के अंदर जितने भी काम करना चाहे शक्ति के बिना कामयाबी नहीं हो पाती। किसी भी चीज़ को हम आकर्षण करना चाहें तो लाज़मी शक्ति की ज़रूरत है। बिना शक्ति के हम किसी चीज़ को आकर्षित नहीं कर सकते।

सृष्टि के अंदर मनुष्य को, जो स्थूल शरीर मिला है वह शरीर भिन्न भिन्न पदार्थों का सम्मिश्रण होता है। सृष्टि में किसी भी पदार्थ को बिना शक्ति के आकिर्षत नहीं किया जा सकता। शक्ति न हो तो मनुष्य किसी काम का नहीं। जो कमज़ोर है, जिसके अंदर बल नहीं, वह ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सकता। अतः भिन्न भिन्न रूपों में शक्ति पूजन का बड़ा भारी महत्व है। इसका बहुत अधिक प्रचार हुआ है।

आगम और निगम-दो शास्त्र बहुत प्राचीन काल से चला आ रहा है, उसमें आगम जो है उसे एक तन्त्र-शास्त्र भी कहा जाता है। तंत्र-शास्त्र में शक्ति के उत्थान के लिए, शक्ति को जाग्रत करने के लिए एक विधान दिया गया है। उसके अंदर जितनी भी ज्यादा से ज्यादा प्रक्रियाएँ बताई गई हैं, ये सारी शक्ति को जाग्रत करने के लिए बताई गई हैं। क्यों बताया गया? क्योंकि शक्ति को जाग्रत किए बिना कल्याण नहीं हो सकता। हमारे शरीर में बहुत शक्ति छिपा हुआ है। वह शक्ति भिन्न भिन्न नाड़ियों से सम्बन्ध रखने की

वजह से जाग्रत नहीं होता है। भिन्न भिन्न ढंगों से उसे जाग्रत करने के लिए कोशिश की जाती है। अतः वह शक्ति जो भिन्न भिन्न रूपों में भिन्न भिन्न स्थानों के भीतर छिपी होती है, उसे जाग्रत करने के लिए भिन्न भिन्न तरीके प्रयोग में लाए जाते हैं। इसी उद्देश्य को मद्दे नज़र रखकर तन्त्र-शास्त्र का उदय हुआ। तन्त्र-शास्त्र ने बताया कि ये जो शक्ति भिन्न भिन्न रूपों में तुम्हारे अंदर छिपी हुई है, इसे जाग्रत करने के लिए भिन्न भिन्न तरीके हैं।

शक्ति का शरीर में छिपने का सात्विक, राजसिक और तामसिक-इन तीन प्रकार से भेद किया। हमारे शरीर में जो भिन्न भिन्न नाड़ियां हैं, इन नाड़ियों के अनुसार उन्होंने भिन्न-रूप से विभाजन किया। विभाजन करके कहा इन नाड़ियों का भेदन करने पर इन शक्तियों को जाग्रत किया जा सकता है। वास्तव में यह एक ही शक्ति है। चाहे वह सतोगुणी हो, रजोगुणी हो या तमोगुणी। वास्तव में इन तीनों के अंदर वह एक ही शक्ति काम करता है, शक्ति के अलावा और कोई पदार्थ नहीं।

जैसे हम उठ रहा, बैठ रहा, लिख रहा, पढ़ रहा, देख रहा, विचार कर रहा, खा रहा, या अन्य भिन्न भिन्न कार्य कर रहा है, ये सब शक्ति का ही भिन्न भिन्न रूप हैं। शक्ति के अभाव के अंदर यह कुछ भी क्रिया नहीं हो सकती। इसका भाव सुषुप्ति अवस्था में होता है, जहाँ जाकर हम बड़ा आनन्द अनुभव करते हैं और सो जाते हैं। शक्ति के अभाव में वह आनन्द हमें नहीं मिल सकता। किसी भी चीज़ का आनन्द बिना शक्ति के कभी भी नहीं मिल सकता।

शक्ति के ज़रिए से ही सृष्टि को अनुभव कर सकते हैं। सृष्टि में जो भी पदार्थ हम देखते हैं, इस शक्ति को ही देख रहे हैं। शक्ति के अभाव में किसी भी चीज़ को हम देख नहीं सकते। सुनते हैं तो शक्ति के ज़रिए से सुनते हैं। इसी प्रकार चलते हैं, सुनते हैं, बैठते हैं, जो भी करते हैं शक्ति के ज़रिए से ही करते हैं। कल्पना जो करते हैं, उसकी कल्पना भी शक्ति के ज़रिए से ही करते हैं। यदि कल्पना के अंदर शक्ति का अभाव हो तो कल्पना कभी भी सिद्ध नहीं हो सकती।

कल्पना के अंदर भी कई भेद होते है, जैसे शक्ति-सम्पन्न- कल्पना होती है तो वह बिल्कुल सत्य प्रतीत होने लग जाती है। उसकी कल्पना-शक्ति इतनी प्रबल हो जाती है कि जो कुछ हम कहेंगे वह सत्य हो जाएगा। जैसे पतंजलि ने कहा है 'सत्य प्रतिष्ठायाम

क्रिया फलाश्रयतम्' अर्थात् सत्य की प्रतिष्ठा होने पर जो कुछ भी वह सत्य होता है। अर्थात् जो कुछ भी वह कहेगा, वह सत्य हो जाएगा। यही शक्ति का प्रभाव होता है।

क्योंकि जिस टाईम पर हम सत्य की प्रतिष्ठा करते हैं, सत्य की प्रतिष्ठा होने पर हमारी जुबान (जिह्वा) पर शक्ति जो है वह संचित हो जाती है। फालतू बोलने के लिए गुजांयश नहीं होती। जुबान से फालतू बोल बोलने पर इसकी शक्ति नष्ट हो जाती है। तो शक्ति-सम्पन्न होने की वजह से न बोलने पर जुबान पर वही शक्ति संचित होने के कारण वह जो भी कहेगा, वह सत्य हो जाता है। सत्य होने पर वह सिद्ध हो जाती है। जुबान पर आई शक्ति की वजह से ही वह सिद्ध होती है। तो बिना शक्ति के कुछ भी सिद्ध नहीं हो सकता।

अत: योगशास्त्र में भिन्न-भिन्न प्रकार की जो शक्तियाँ बताया ये सब भिन्न-भिन्न उपाधियों की वजह से भिन्न होने पर भी एक ही शक्ति में छिपी हुआ है। भिन्न-भिन्न शक्लें हमें भिन्न शक्तियाँ प्रदान करती हैं। तो बाहर की भिन्न भिन्न शक्तियों को जाग्रत करने की अपेक्षा भीतर छिपी उस शक्ति को जाग्रत करने का प्रयत्न करो जिसे सर्वशक्तिमान चैतन्य-शक्ति माना जाता है। तमाम शरीर के अंदर, नख से लेकर शिर तक जिसकी शक्ति से यह खड़ा है, जिसकी प्रेरणा से उठता, बैठता, बोलता या चलता है, अन्न को हज़म करता है और शरीर के अंदर जो खून का सरकूलेशन (संचार) हो रहा है और भिन्न भिन्न खाये हुए पदार्थों को भिन्न भिन्न रूप देता है।

वास्तव में एक बड़ा भारी कारखाना इसके अंदर चलता है। यह कारखाने की क्रिया सारी इस शक्ति से ही चलती है, इसके बिना कुछ भी नहीं चल सकता। अब किसी बड़े भारी कारखाने में जाकर तुम देखो तो वह निरन्तर चलता रहता है। किसके ज़रिए से चलता है? वह मशीन की शक्ति से चलता है। जिस प्रकार से वह कारखाना मशीनी-शक्ति से चलता है, इसी प्रकार से यह शरीर-रूपी-कारखाना भी उस चैतन्य-शक्ति से चलता है। इसके अंदर भी बड़ा-बड़ा कारखाना चलता है। यह बाहर दिखाई देने वाला बहुत बड़ा-बड़ा कारखाना जो है, ऐसे ही मनुष्य के शरीर में भी बड़ा भारी कारखाना चल रहा है।

इसकी शक्ति शरीर से ही पैदा होती है, बुद्धि से पैदा होती है। यह शक्ति-रूप है। बुद्धि में बड़ी शक्ति है, यह स्वयं शक्ति-रूप है। बुद्धि शब्द ही शक्ति का नाम है। बुद्धि के साथ रहकर यह सृष्टि का संचालन सब वही करती है, और कोई नहीं करता, किसी भी

सूरत में। उसी प्रकार की उपासना करने के लिए भिन्न भिन्न प्रकार से तरीके हमारे सामने रखा। जैसाकि हमने देखा कि शक्ति-उपासना भी तीन प्रकार की बताई है - सतोगुणी, रजोगुणी और तमोगुणी। तमोगुणी और रजोगुणी उपासना से प्रकृति का कुछ लाभ होता है, इससे मान, प्रतिष्ठा, इज्जत-बड़ाई या पदार्थक लाभ प्राप्त किये जा सकता है। इसके अतिरिक्त इसी शक्ति से ही, सतोगुणी उपासना यदि हम करेंगे तो यह कल्याणकारी सिद्ध होगी।

जैसे राम-कृष्ण परमहंस थे, वे काली के उपासक थे। उन्होंने बहुत ही निष्काम्य-भाव से काली की उपासना किया। निष्काम काली-उपासना करते-करते आत्मतत्व को प्राप्त किया। विवेकानंद आदि शिष्य जिसके था। राम-कृष्ण परमहंस क्या करते थे? और कुछ नहीं करता थे। काली मां के मंदिर में, सुबह स्नान करके वहाँ जाकर मां की उपासना करते थे, मूर्ति के समक्ष लेट जाना, शाम तक लेटे रहना और कहना, मां! रात भी गुज़र गई, तुम नहीं मिला। बस इतनी ही उपासना थी। ऐसे उपासना करते-करते हुए उसे यह सृष्टि सारी माता का रूप ही दिखाई देने लगी। माता की शक्ल में नज़र आने लगी। यह एक ब्रह्म दृष्टि होता है। निष्काम्य-भाव से उपासना करने का नतीजा यह निकला कि यह सृष्टि सारी उसे ब्रह्ममय नज़र आने लगा, मां काली का ही रूप दिखाई देने लगा।

इसी तरह ब्रह्म वेद और वेद का अध्ययन, मनन, वेदांत का चिंतन करके वो समाधि प्राप्त कर जाते थे, बिल्कुल शक्ति में निष्काम्य-भाव में प्रतिष्ठित हो जाते थे। कहने का मतलब है उपासना स्वयं कोई खराब नहीं, हमारी मानसिक-वृत्ति में जैसे भावना होती है वैसे ही उपासना अपना रूप धारण कर लेती है। मन के अंदर तमोगुण की और रजोगुण की प्रधानता होगी और हम उपासना करेंगे तो सांसरिक लाभ हमें कुछ हो सकता है, मगर उससे अन्त:करण कभी भी शुद्ध नहीं होगा। निष्काम्य-भाव से जब शक्ति की कोई उपासना करेंगे तो अन्त:करण शुद्ध होगा। अन्त:करण शुद्ध होने का नतीजा है आत्म-ज्ञान, जिसे सारी दुनिया चाहती है। जो उसमें सारी शक्ति की प्राप्ति के लिए सिद्ध होगा। शक्ति के बिना कुछ भी नहीं हो सकता।

जैसे मार्कण्डेय ऋषि वगैरह ने बड़े सुंदर ढंग से वर्णन किया है। तो कहने का हमारा मतलब है यदि जिंदगी के अंदर सफलता प्राप्त करनी है तो शक्ति को प्राप्त करना ज़रूरी है। बिना शक्ति के इस संसार-यात्रा के अंदर सफलता कभी भी नहीं मिल सकती,

इसलिए शक्ति की उपासना बहुत ज़रूरी है। शक्ति के बिना कभी भी सफलता नहीं मिल सकती। प्राचीन युग के राजा लोग सफलता के लिए या किसी देश के अंदर हमला करने के लिए चलते थे तो पहले शक्ति पूजन करके ही चलते थे। शक्ति-पूजन किए बिना वह जाते नहीं थे। क्योंकि इसके बिना कुछ भी कामयाबी नहीं हो सकती।

इसलिए हमारा फर्ज है, हम अंदर छिपी शक्ति को जाग्रत करने की कोशिश करें। हमारे अंदर भिन्न शक्तियाँ छिपी हुई हैं। यदि एक शक्ति को भी जाग्रत कर ले मनुष्य, तो उसे बहुत कुछ समझना चाहिए। हमारा फर्ज़ है चलते-फिरते, उठते-बैठते उस शक्ति के बारे में स्मरण करें तो लाज़मी है वह शक्ति जाग्रत होगी। इसे निष्काम-भाव से, नि:स्वार्थ-भाव से करते रहेंगे तो वह ब्रह्म-शक्ति भी हमारे अंदर जाग्रत हो सकती है। ऐसा हो सकता है। वह भी हमारे अंदर छिपी हुई है, वह बाहर नहीं, कहीं बाहर तो नहीं!

यदि जीवन में किसी भी तरह सफलता प्राप्त करनी है, सांसारिक विषयों के अंदर भी सफलता प्राप्त करनी है तो भी शक्ति की उपासना करना लाज़मी होती है। इसी प्रकार अध्यात्मिक या ध्यान आदि विषयों के अंदर जाना है तो भी शक्ति की उपासना ज़रूरी है। दोनों प्रकार से शक्ति के बिना तो कुछ भी नहीं हो सकता। इस लिए हमारा कहना है कि शक्ति की उपासना करना ज़रूरी है। इसके बिना गुज़ारा नहीं होगा। आज के दिन में शक्ति की उपासना का एक अच्छा तरीका आप लोगों के सामने रखा, इसका फायदा उठाने की कोशिश करो। जहाँ तक भी है, हमारा तो यही ख्याल है कि इससे अपने कामों में सफलता प्राप्त करोगो। बोल स्वामी जी महाराज की जय की सामूहिक जय-ध्वनि के साथ यह प्रवचन समाप्त हुआ।

- ॐ -